में देखा, मैंने यह देखा, मैंने वह देखा, आपका रंग सफ़ेद था, आपका रंग पीला था, ऐसी-वैसी बातें अपने स्वप्न की या दिन के वक़्त में ऊँघ की हालत की बताईं। अब मैं अगर इसको अपना गुरु न मानूँ तो तुम बताओ किसको मानूँ! मैं तो गया नहीं, न मुझे पता है। मुझे इस सन्तमत के सच्चे होने का यक़ीन तुम लोगों ने कराया। मुझ को यक़ीन होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए कि यह उस के अपने ही मन का खेल है, मैं तो गया नहीं इसके अन्दर। इसने मुझे कहा, मुझे दस मिनट दो, मैंने कहा, चल भई! मैं अन्दर चला गया। इसने पर्चे पर लिखा हुआ था सुनाता गया और मैं सुनता गया। अब अगर मैं इसको यह सच्ची बात नहीं बताता कि जो कुछ तुम ने अपने अन्तर मेरी शक्लें देखीं या जो कुछ मैंने कहा यदि तू इन को सच मानता है तो दस जन्म और भी इस दुनिया के चक्कर से बाहर नहीं जा सकता और मैं यदि तुमको सच्ची बात नहीं बताता तो मैं मर गया। झूठ बोलना, धोखा करना, फ़रेब करना क्या सन्तों में यह जुर्म नहीं है, है या कि नहीं है? जुर्म है। तो मैं अगर यह साफ़बयानी नहीं करता, आप

लोगों से झूठी इज़्ज़त लेता हूँ और पैसे लेता हूँ तो क्या मैं मुज़रिम (दोषी) नहीं हूँ ? मैं मुज़रिम (दोषी) हूँ। इसलिए मैंने गुरुआई की, गुरु नहीं बना। गुरुआई की मगर सच्चाई की। मैं तुमको सच कहता हूँ कि इन मज़हबों और महात्माओं ने हम गृहस्थियों के साथ (दुःख के कारण गला रुँध कर भारी हो गया) ऐसा बुरा सलूक (व्यवहार) किया है जिसको मैं देख नहीं सका। कल एक कोई ज़मींदार आया हुआ था, भगवां पगड़ी पहनी हुई थी, भगवां कुर्ता पहना हुआ था, ज़मींदार है, पुत्र-पोतों वाला है। किसी मेरे दोस्त को उसने कहा कि मैं तो कहीं नहीं जाता। कोई आदमी कह देता है कि अमुक काम हो गया तो मैं ऊपर मुँह करके कह देता हूँ। और आप उसने ख़बर नहीं कितनी-2 ग़लतियाँ की होंगी इनका लोगों को अभी पता ही नहीं, मगर दुनिया का ख़्याल बैठ गया हज़ारों आदमियों का गुरु है, कोई बात कह देता है। बात क्या थी, क्यों मशहूर हुआ वह ? सूखा हुआ एक वृक्ष था उसको वह रोज़ पानी देता था। वह वृक्ष हरा हो गया। लोगों ने समझा देखो ! इस महात्मा ने सूखे वृक्ष को हरा कर दिया।

आप समझ गये मेरी बात को ? तुम किसी वृक्ष को पानी देते रहो वह किसी वक़्त में हरा हो जाता है। जीव तो अज्ञानी है इसको तो पता नहीं। रात को स्वप्न में फ़कीर चन्द आ गया, उसने कोई बात कह दी पूरी हो गई, वह बेचारा चक्कर लगाकर के मेरे पाँव पूजता है। अगर मैं उसको सच्चाई नहीं बताता तो क्या मैं मुज़रिम नहीं हूँ ? अगर मैं ग़लत कहता हूँ यह छपेगा जो कुछ मैं कह रहा हूँ। आजकल के महात्मा जो बने हुए हैं गद्दीपति या दूसरे ये मेरे सामने आयें और कहें कि मैं ग़लत हूँ, मेरे साथ यह बात बोती। वहाँ लिखा हुआ है :—

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब।

क्या हट सकते हैं ? हां, हट सकते हैं। कैसे ? ज्ञान से। जब से मुझे मन के रूप का ज्ञान हुआ, गो अभी मैं किसी वक़्त गिर जाता हूँ, आप को सच्ची बात बताऊँ झूठ नहीं बोलता, परन्तु पीछे से सम्भलता हूँ, कई दफ़ा गिर जाता हूँ मगर राज़ को मैं समझ गया। जिसको यह यक़ीन है कि मन के अन्तर के जितने ख़्यालात हैं यह माया है, कल्पना है, वह उस

में फँसता नहीं फिर, क्योंकि वह समझता हैं कि यह ख़्याल है, स्वप्न है, ख़्वाब है, इस तरीक़े से माया के जाल तो कट सकते हैं। अगर सिर्फ़ पास बैठने से ही किसी के माया, कर्म के जाल कट सकते हों तो भाई मुझे पता नहीं, शायद ये सन्त, महात्मा किसी के काट सकते हों मगर मैं कैसे मानूँ ! बाबा सावन सिंह जी की टाँग टूट गई, बाबा जैमल सिंह उनके गुरु थे, महापुरुष थे, तो अगर वह कर्म को टाल सकते होते तो टाँग क्यों टूटती ! दुनिया ने समझा नहीं है। जब इन्सान को यक़ीन हो जाता है कि यह मन का झगड़ा है तो मन के हालात में अपने आप चूँकि attach नहीं करता, वह परवाह नहीं करता। जो मन के अन्दर संकल्प उठते हैं उनकी वह परवाह नहीं करता, इस परवाह का न करना और अपने आप में ठहरे रहने का नाम ही है जीवन्मुक्त अवस्था और यही मंज़िले मक़सूद है सनातन का, जैनियों का और बौद्धों का।

अब मैं हैरान होता हूँ कि सन्तमत की जो तालीम थी वह आजकल कौन देता है। सब अपनी ही इज़्ज़त, अपने ही मान, अपनी ही दौलत और

अपने आप को बड़ा समझने के लिए करते हैं कि हां! मैंने यह किया; कोई बात हो गई, "सुनो भई! यह क्या कहता है!" लाऊड स्पीकर आगे रख दिया, अब दुनिया और फंस गई, आप चुप कर गये। हम भोलेभाले जीवों को क्योंकि हम दुनिया के कुत्ते हैं दुनिया की आशाओं के पीछे, गुरुओं के पीछे फिरते हैं। कोई कुम्भ में जाता है, कोई आनन्दपुर जाता है, कोई कहीं जाता है, कोई कहीं जाता है, कोई कहीं जाता है। यह है क्या तमाशा? यही तो अज्ञान है और इस अज्ञान ने इन्सान को बाँट दिया, कोई मुसलमान हो गया, कोई हिन्दु हो गया, कोई सिक्ख हो गया, कोई कोई हो गया, इन्सान बँट गया, मैं ऐसा समझता हूँ। तुम लाख मेरे पास बैठे रहो अगर मेरी बात को तुम नहीं समझ सकते, सुन कर अमल नहीं करते, तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि तुमने सत का संग नहीं किया। सत का संग है क्या? बाहर के गुरु की दया से तुमको अभ्यास कराके यक़ीन करा दिया जाता है कि तुम्हारा अपना जो रूप है यह हमेशा के लिए सत है। यह ड्यूटी है बाहर के गुरु की मगर आजकल के बाहरले गुरुओं

की मां मर जाये, कोई ऐसी बात कहता ही नहीं जो मैं कहता हूँ।

आप लोग आ जाते हैं, मैं सत्संग कराता हूँ, अब मेरी आत्मा पर सत्संग कराने का कोई बोझ नहीं, आपके जी को खुशी हो आया करो, खुशी हो न आया करो। अगली बैसाखी आने वालो है आप का जो चाहे आना, जो चाहें मत आना। समझते हो यह काम ठीक है, चार पैसे अगर देना चाहो तो दे जाओ नहीं तो मत देना। मैं बात सच्चो और साफ़-सुथरी कहता हूँ, आग लगे गुस्आई को, वह सोना मैं क्यों डालूं कानों में जो मुझ को दर्द करे। गुरु की पदवी पर आकर अगर मैं हेरा-फेरी करता हूँ, झूठ बोलता हूँ, तुम लोगों को धोखा और फ़रेब देता हूँ तो मेरा जैसा पापी कौन है। मेरी संगत से एक फ़ायदा ज़रुर है कि जब तक तुम वहाँ ऐसे पुरुष के पास बैठे रहोगे तुम्हारे मन में एक प्रकार को शान्ति की लहर रहेगी। मन, जब तक उसके पास बैठे रहोगे ज़्यादा ऊटपटांग में नहीं जायेगा, यह फ़ायदा ज़रूर है। बाकी फ़ायदा जो है यह उसकी बात को सुनना और समझना है। लाख तुम मेरे मन्दिर

बनाओ, अगर तुम मेरी बात को नहीं समझते तो क्या फ़ायदा ! एक आदमी जाता है, पचास हज़ार रुपये से देवी का मन्दिर बनवा देता है, डेरा बना देता है मगर वह गुरु की बात को नहीं समझता, वह पचास हजार रु: जो उसने दिया हुआ है वह उसको तारेगा नहीं। हाँ ! अगर उसने साफ़ नीयत से दिया है तो उसको शायद उस रुपये से ज़्यादा भी मिल जाये। रुपया दोगे रुपया मिलेगा, प्रेम दोगे प्रेम मिलेगा, कपड़े दोगे कपड़ा मिलेगा, हमदर्दी करोगे तुम्हारे साथ कोई हमदर्दी करेगा, बात सच्ची है :—

काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब।

अब देखो ! क्या कहते हैं, शब्दों के मतलब को समझो। इसका यह मतलब हुआ कि गुरु ने फूँक मार कर तुम्हारे कर्म नहीं काटने, तुमने खुद काटने हैं, कैसे ! किसी कामिल गुरु के पास बैठके उसकी बात को सुनकर, ज्ञान को हासिल करके तब कटेंगे अर्थात् आप महसूस नहीं करोगे। दुःख आया, आप कहते हैं, भई चलो ! चला गया !! यह है असली बात। देखो न ! वाणी है, दाता ने लिख दिया, अब ऐसे लिखे

हुए को समझेगा कौन ? उन्होंने कोई गलत तो लिखा नहीं, इसी वास्ते कहते हैं कि सन्त की वाणी को केवल सन्त समझ सकता है क्योंकि उसने ये दर्जे पास किये हुए होते हैं। तुमने अपने कर्मों को आप अपने ज्ञान से, अपनी हिम्मत से, अपनी समझ से काटना है, गुरु ने तुमको उसके काटने के लिए समझ, ज्ञान और विवेक बताना है। चूँकि यह सच्ची समझ, विवेक और ज्ञान जब तक मन स्थिर न हो किसी को आ नहीं सकती इसलिए पहिले सुमिरन, ध्यान, और भजन ये तीन चीज़ें कराई जाती हैं। इन तीन चीज़ों के करने से और सत्संग से तब यह हालत पैदा होती है क्योंकि मेरे साथ यह बीती इसलिए मैं कह रहा हूँ और यूँ भी किसी भी सन्त की वाणी पढ़ लो सब यही कहते हैं :—

गुरु की दया साध की संगत सहजे ही में पाया।

गुरु नानक साहिब भी यही कह गये 'साध की संगत'! अब मैं यह पूछता हूँ कि साधुओं की संगत क्या होती है ? अगर संगत का हिसाब लिया जाये तो मेरे ख़्याल में गुरु लोग तो मर जायेंगे। पूछो

क्यों ? संगत कहते हैं रेडियेशन को। हर आदमी के अन्दर से जैसा वह है वैसा निकलता रहता है। अब मेरा ख़्याल है कि कई बार मैं जो गिरता हूँ तो इसीलिए गिरता हूँ कि आप लोगों की संगत आती है। रेडियेशन निकलने का सबूत तुमको पुलिस वालों के कुत्ते देते हैं। जहाँ चोरी, डाका होता है वह डाकू या क़ातिल की कोई चीज़ लेकर कुत्ते को सुँघा देते हैं फिर छोड़ देते हैं कुत्ते को। जिस-जिस तरफ़ से वह गया है वहाँ वह खुशबू होती है। उसको सूंघते हुए वह कुत्ता जहाँ वह चोर या क़ातिल होता है वहां चला जाता है और उसको पकड़ लेता है। तो इससे सिद्ध हुआ कि हरएक व्यक्ति के अन्दर से रेडियेशन निकलती है। तुम लोग आते हो, कोई किसी किस्म का है कोई किसी किस्म का है। वे गुरु जिनकी नीयत कुछ खराब है और स्वांग बनाकर बैठे हैं जब तुम उनके पास जाओगे तुम को कभी शान्ति तो क्या शान्ति का पता तक भी नहीं मिलेगा। मैं हूँ, अब मैं हूँ आप मेरे पास आते हैं, आप मुझे मत्था टेकते हैं, टाँगें दबाते हैं तो अगर मेरी रेडियेशन आपके पास जायेगी तो आप की रेडियेशन मेरे पास क्या नहीं

आयेगी ? आयेगी, कोई रोक नहीं सकता, यह तो कानून है। मैं उसको कैसे दूर करता हूँ ? मैं आप लोगों से प्यार ही नहीं करता अर्थात् अपने मतलब व ग़रज़ के लिए आप लोगों से मुहब्बत नहीं करता। आप लोग जो आते हैं उनके सवाल का उनके ख़्याल के अनुसार उनके ही साथ शामिल होकर उनको जवाब दे देता हूँ। अगर मैं आप लोगों से मुहब्बत करूँ तो मैं तो मर जाऊँ। इतने आदमी हैं, तुमने बुराइयाँ भी की हुई हैं, चोरियाँ की हुई हैं, डाके मारे हुए हैं, कई औरतें आती हैं दस नम्बर की बदमाश भी होती हैं उनका तो असर मेरे पर आयेगा। मगर अगर मैं अपनी ज़ात के लिए किसी से मुहब्बत नहीं करता तो मुझे कोई दोष नहीं। रेडियेशन आयेगी तो सही ! पर मैं आपसे तब लूंगा और मुझ पर असर तब करेगी जब कि मैं उसको लेने के लिए तैयार हूंगा, मैं तो तैयार नहीं। इसीलिए सन्तों के दरबार में चोर, डाकू सभी आते हैं, उनकी संगत से सुधर जाते हैं :—

मुख्य साधन संग सत का, और शेष हैं समझ गौण।
इससे सूझेगी परमगति, सद्गति की चाल सब ॥

मुख्य साधन सत्संग है। तो मैंने आपको बोला कि अगर मैं इस मन्दिर को अपनी ज़ात के लिए कि मैं अपने पुत्रों के लिए या अपनी ज़ायदाद बना जाऊँ अर्थात् अपने लिए पैसे इकट्ठे करने का साधन बनाऊँ तो मेरा सत्संग तो आपको डुबो देगा। सत्संग हमेशा किसी योग्य व्यक्ति का होना चाहिए जिसको अपनी कोई ग़रज़ न हो वह अपनी ज़ात के लिए यह काम न करे क्योंकि जो इसलिए काम करता है कि एक जगह से मुझे घी आ जाये दूसरी जगह से मुझे यह चीज़ आ जाये, यह आ जाये, वह आ जाये उसके संग से आपको क्या मिलेगा? लालच और तमां। आजकल यह गुरुआई दुनिया में रोज़ी-कमाने का धन्धा है। कल वह जो भगवां कपड़े वाला आया था वह पुत्र-पौत्रों वाला है, ज़मींदार है, लोगों ने उसको साहिबे क़रामात समझ लिया कि सिद्धि शक्ति वाला है, उसको सन्त मानने लग गये। अब लोग उसको घरों में बुलाते हैं, पैसे देते हैं, कपड़े देते हैं, इज़्ज़त करते हैं तो वह तो जिन्होंने इज़्ज़त की है उनको तो इतना नुक़सान नहीं है क्योंकि उनकी श्रद्धा होती है, विश्वास होता है, उनको तो फल मिल जायेगा परन्तु जो

लेता है मेरे जैसा, वह तो मारा गया ! वह मारा गया !! इस वास्ते हुक्म है :—

शिष्य को ऐसा चाहिए कि गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए कि शिष्य का कछु न लेय ।।

अगर हम गुरुआई करते हैं अपने ज़ाती तमां के लिए तो हम मुज़रिम हैं। अगर फ़र्ज़ करो हम नहीं कमा सकते तो अगर वह ले सकता है तो रोटी ले सकता है, उस पैसे को दूसरे दिन के लिए जमा नहीं कर सकता कि दूसरे दिन के लिए जमा करो,- यह कबीर साहिब के कहने के अनुसार कहता हूँ।

जिसने पाया पाया सत्संग से, भक्ति ज्ञान गम।
तू उतारेगा विवेक और तरकना की खाल सब ।।
कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन,नाम कुछ दिन मुक्त गति।
इसके पीछे पद है सत का, सत की रोती फाल सब ।।

दोस्तो !

ओ जीना चन्द दिन दा,
काहनँ पखण्ड जगाएँ ओए फ़कीरा,
जीना चन्द दिन दा !'

मेरी उमर गुज़र गई इस सतपद को ढूँढ़ते हुए। दो तीन बार मैं अभ्यास में इस क़दर प्रकाश और शब्द में गया कि उसका अन्त नहीं मिलता था। यह ठीक है मगर मैं सतपद को यह समझता हूँ कि इन्सान को अभ्यास व सत्संग करके, तजुर्बे से यक़ीन हो जाता है कि मेरी यह वह जो ज़ात है वह अविनाशी है, यह शरीर भी, मन भी और जो कुछ भी है यह सिर्फ़ चन्दरोज़ा एक तमाशा है, स्वप्न है। मैंने एक किताब लिखी है, अंग्रेजी में छपी है, चालीस वर्ष पहले उर्दू में लिखी थी 'तशरीह हिदायतनामा' हिदायतनामे की तशरीह अर्थात् जो कुछ हिदायतनामे में लिखा है कि इतने योजन मैं गया, यह है, वह है, सब की मैंने नुक्ता-चीनी कर-2 के उनके उत्तर दिये हैं। सवाल मैंने दिल से उठाया ज़वाब भी मैंने दिल से दिया, मैंने वहाँ सिद्ध किया है कि सन्नमत वास्तव में क्या है। लोग शब्दों का अर्थ नहीं समझते। अब जिस शख़्स ने राधास्वामीमत चलाया है, जिसने स्वामी जी की इतनी सेवा की है कि उनकी टट्टी में चूहड़ा नहीं जाता था, वह आप साफ़ करते थे, राय साहिब राय सालिगराम साहिब और चक्की आप पीसते थे,

उसके आटे से उनको खाना खिलाते थे मगर जब स्वयं गुरु पदवी पर आये तो आँख खुल गई। लिख गये, सत्तगुरु कौन ? सत्तगुरु केवल शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल, उनके चरण प्रकाश। बाहरले गुरु की यह ड्यूटी है कि वह जीव को बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी कर दे और जितना उन्होंने उनके गुण गाये हैं केवल इसलिए गाये हैं कि उनको उनसे भेद मिला, सच्चाई का सौदा मिला। अब तुम क्या देखो! सच्चाई नहीं है, इस शख़्स ने 11-12 बातें अपने स्वप्न की या दिन के वक़्त में बैठे हुए को लिखीं कि मैं गया, मेरा हवाला दिया, अब तुम सोचो, मैं अगर आदमी का बच्चा हूँ तो मुझे सोचना चाहिए क्यों फ़कीर चन्द! तू गया था? नाहिं, मैं नहीं गया। यह क्या खेल है। मेरी समझ में नहीं आया। मेरे पिछले जन्म के कर्म हैं, मुझे यश मिलना था जो कुछ होना था यह हो गया। अब जा रहा हूँ 24 अप्रैल को बाहर कैनेडा, अमरीका, इंग्लैंड और जर्मनी में। वहाँ दो महीने रहूँगा और यही कहूँगा कि तुम मेरे शरीर को गुरु मत मानो, मेरी बात को मानो। मन्दिर को हिन्दुस्तान से इतना पैसा नहीं

आता जितना कि अंग्रेज लोग और दूसरे वहाँ के रहने वाले मेरी सच्चाई को देखकर भेज देते हैं। अगर मुझे यश मिलता है तो ये मेरे पिछले कर्म हैं इसमें मेरी बहादुरी व चालाकी नहीं है।

तो हमको, तुमको जो कुछ मिलता है कर्मों का फल मिलता है। अगले इतवार को बैसाखी है, मेरे पास जो कुछ है मैं वही तो कहूँगा, अब मुझ से क,ख,ग नहीं पढ़ाया जाता क्योंकि मैंने समझ लिया कि यह धोखा है और फ़रेब है। अगर मैं भी दुख व कष्ट उठाकर मरा और अगर मुझे होश रह गई तो मैं लिख जाऊँगा कि कोई आदमी सच्चाई न बरते, खूब लूटो दुनिया को और खाओ तथा मौज़ उड़ाओ। अगर तलवार की धार पर चलने से भी आदमी की सुरत को तकलीफ़ होती है तो भई! हम तो यही समझेंगे कि पिछले जन्म के कर्म हैं, इस जन्म में तो मैंने कोई खोटा कर्म किया नहीं, सिवाय चार ग़लतियों के जो मैंने कीं बस, मैंने कोई पाप नहीं किया। किसी के साथ दुश्मनी या किसी के साथ झगड़ा ही नहीं हुआ मगर बाज़ वक़्त मैं भी गिर जाता हूँ। परसों गिर गया मैं। असल में हम मार्च का वेतन

मार्च में ही हर साल 29 या 30 तारीख को दे देते हैं। हिसाब चैक करने वाले चैक्कर आते हुए हैं उन्होंने Objection किया। कोई आदमी यहाँ से गुज़रा उसने अपने साथी से कहा "देखो जो! मन्दिर है, तेरह-2 महीने का वेतन ये लोग हड़प कर जाते हैं। पैसे हमारे होते हैं, तेरह-2 महीने का वेतन ये मन्दिर वाले खा जाते है।" मुझे पता नहीं था, मैं अपने आदमियों पर विश्वास करता हूँ। मैं फिर यहाँ से गुस्से भरे में चैक्कर के पास गया और उससे पूछा कि आप यह कैसे कहते हैं, सबूत दो मुझे कि यहाँ चारसौबीसं (fraud) होता है, बताओ ? पिछले वर्ष में देखा वहाँ 11 महीने का वेतन दिया हुआ था ; एक वर्ष में 13 महोने को दे दी एक साल में 11 महीने की दे दी। मैं जानता हूँ न कि उस वक़्त मैं गिर गया था, मुझे गुस्सा था, उस वक्त, मेरा शरीर काँपता था। मैंने सोचा कि मेरा शरीर क्यों काँपा ? मुझे गुस्सा क्यों आया ? दोस्तो ! अपने मन को परीक्षा हो गई। मैं यहाँ बेईमानो नहीं चाहता, हेराफेरी नहीं चाहता। क्यों ? इससे इज़्ज़त मिलती है। तो जो शख़्स इज़्ज़त का इच्छुक है वह पापी

नहीं है तो कौन है ? मैं अगर गुस्से हुआ, क्षमा करना, केवल इस ख़्याल से हुआ कि भई ! मन्दिर है, अगर ऐसी कोई बात हेराफेरी की हो जाती है तो बदनामी होगी। उस समय तो एक घण्टा या डेढ़ घण्टा मुझे अपनी होश हो नहीं आई, मैं मन के चक्कर में फँसा था। पीछे से सोचा, मैंने कहा तेरा क़सूर है फ़क़ीर चन्द ! अगर तुझको अपनी इज़्ज़त की ख़्वाहिश न होती फिर तू कभी भी यह बात न कहता क्योंकि तेरे ऊपर तो बात ही कोई नहीं, तू तो हिसाब रखता ही नहीं है, न तेरे पास कुछ है, न तेरी कोई शिकायत है। तो इन्सान है इतना ऊँचा जाना बड़ा मुश्किल है, गिर जाते हैं परन्तु मुझ पर इतनी दया है आप लोगों की कि मैं गिर कर सम्भल जाता हूं, बस :—

अर्थ धर्म और काम मुक्ति, की है कुंजी सत का संग,
राधास्वामी संग कर, दे काट अब जंजाल सब।

वह कहते हैं सत्संग से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष वह गुरु की संगत से मिल जाता है। वह राज़

बता देता है। मैं अपने आप से पूछता हूँ, तू गुरु बना हुआ है न, गो तूने दुनिया को तरह नाम नहीं दिया, तूने क्या सबक़ दिया ? मैं यही तो कहता हूँ कि अपने ख्याल को ठीक रखो, जब तुम्हारा ख्याल ठीक है, नीयत साफ़ है धर्म भी मिल जायेगा, मोक्ष भी मिल जायेगा, सब कुछ मिल जायेगा मगर यह एक दिन का काम नहीं है। अब बैसाखी आ रही है, मैं महसूस करता हूँ कि वैसाखी का मनाना या गुरुओं के दिन मनाने यह धोखा है, यह तो हम लोग पैसे इकट्ठे करने के लिए दिन मनाते हैं !, चाहे कोई भी डेरा, गुरु या महात्मा होवे। इतने दिन नहीं हैं जितने कि यह जनता व हकूमत पिछले गुरुओं व बजुर्गों के दिन मनाते हैं। मर गया मर गया। उसको तुम याद करते हो क्यों ? हम अपने स्वार्थ के लिए याद करते हैं, अपने चार पैसे हमें आ जायें। इसमें झूठ क्या है ! मैं ग़लत कहता हूँ, बताओ मुझे ?

तो आप लोग आ जाते हैं, दाता ! जब तक होश है मानना पड़ता है कि दुनिया है। जब नींद में

चला जाता हूँ न दुनिया, न मैं, न तू। अब तक हूँ यही प्रार्थना करता हूँ कि अब अपनी गोद में ले चल, बहुतेरी दुनिया देख ली मैंने जिसका कोई अन्त नहीं, नेकी-बदी, गुरुआई-चेलआई सब देख ली।

सत्संग परम सन्त परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

(7-6-81)

शब्द पढ़ा गया :—

(1)

बाँह गहे की लाज सत गुरु, बाँह गहे की लाज ।
आया दीन हीन चरनन में, परमारथ के काज ।।
नाम दान दे अपना कीजे, माँगूं मान न राज ।
ज्ञान ध्यान भोग नहीं क्रिया, भक्ति साज न साज ।।
शरनागत की लज्जा राखो, नहीं तो होवे अकाज ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारो, जग से आया भाज ।।

(2)

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब,
काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब ।
मुख्य साधन संग सत का, और शेष हैं समझ गौन,
इससे सूझेगी परम गति, सद्गति की चाल सब ।
जिसने पाया पाया सतसंग से, भक्ति ज्ञान गम,

तू उतारेगा विवेक और, तरकना की खाल सब।
कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन, नाम कुछ दिन मुक्त गति,
इसके पीछे पद है सत का, सत को रीती पाल सब।
अर्थ धर्म और काम मुक्ति की है कुंजी सत का संग,
राधास्वामी संग कर, दे काट अब जंजाल सब।

राधास्वामी ! दोस्तो, भाईयो, वीरो ! अपने प्रण के जाल में फँसा हुआ यह काम करता हूँ। यह काम क्यों किया था ? केवल सच्चाई, असलियत और हक़ीक़त को जानने के लिए। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फकीर चन्द ! जो इस दूसरे शब्द में लिखा हुआ है, क्या यह ठीक है ? जिस तरह से मैं समझता हूँ उस तरह से ठीक है, जिस तरह से दुनिया समझती है उस तरह से मेरी समझ में नहीं आया।

गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का। किसी बाहर के सच्चे इन्सान से, सच्ची समझ व सच्चा विवेक मिलता है, वह जो सच्चा विवेक और सच्चा ज्ञान मिलता है उससे इन्सान के मन के वहम, भ्रम व अशान्ति दूर होते हैं। मुझ को आप सत्संगियों की वजह से यह अनुभव व ज्ञान हुआ। इसलिए इस उम्र में जो सत्संगी मुझे गुरु मानते हैं मैं

उनको अपना गुरु मानता हूँ क्योंकि उनकी संगत करने से मेरी आँख खुली।

मैं बहुत सच्चाई पसन्द इन्सान हूँ, मैं इस काम से सुखी नहीं हूँ परन्तु मेरा अपना कर्म था, गुरु की आज्ञा थी कि शिक्षा को बदल जाना। आप लोग सत्संग में आते हैं, मैंने पाखण्ड का जाल नहीं रचाया, मैं एक ज़िम्मेवारी को महसूस करता हूँ। सत्संग से मिलता क्या है ? समझ मिलती है, विवेक मिलता है जिससे कि इन्सान के भ्रम के जाल कटते हैं। दाता फ़रमाते हैं :—

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब।

कैसे हटेंगे ? मेरे कैसे हटे ? मैं इस मन के चक्कर में बुरी तरह फँसा हुआ था कभी राम नज़र आ जाता, कभी कृष्ण नज़र आ जाता, स्वप्न में आनन्द आता, बड़ा खुश होता, कितना आनन्द लेता था ! और अगर कोई बुरा ख्याल आ गया तो रोता था। तो वह मेरा काल कैसे कटा ? सत्संग से ! किस के सत्संग से ? आप लोगों के सत्संग से। कैसे ? पता लगा तुम्हारा मन ही गुरु है, तुम्हारा मन ही

चेला है, तुम्हारा मन ही तीर्थ है, तुम्हारा मन ही वहाँ का वासी है, जो कुछ है तुम्हारे अपने मन का खेल है। तो इस ख्याल से मुझे क्या मिल गया ? वह जो मैं दौड़ता फिरता था, हाय ! आज राम के दर्शन नहीं हुए, आज यह नहीं हुआ, आज वह नहीं हुआ। कोई दुःख आ गया, कोई सुख आ गया, वह कट गया। वो तो भुगतने पड़ते हैं मुझे मगर मुझे यक़ीन आ गया कि यह है ही कुछ नहीं, वहम है, भ्रम है, मैं ऐसा समझता हूँ :—

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब।

अब मैं सोचता हूँ क्यों फ़क़ीर चन्द ! दुनिया को किसलिए धोखा देता है ! चार दिन की तेरी ज़िन्दगी है, अगर तू ग़लत तरीक़े से गुरुमत की हिमायत करता है तो तू दोषी है। मैं पूछता हूँ क्या यह ठीक है ? हाँ। यह ठीक है। कैसे ठीक है ? गुरु की संगत से जब समझ आ जाती है तब यह बात होती है। सिर्फ़ गुरु के पाँव चाटने से, गुरु के पास बैठ के गुरु को धन देने से अगर तुम चाहो कि तुम्हारे काल, कर्म कट जायें ये नहीं कट सकते। गुरु

के पास बैठकर, उसकी बात को समझकर अमल करने से काल, कर्म कटेंगे। अब देखो ! मैं दाता के पास गया था मेरी तो बुद्धि बड़ी मोटी थी, विषयी आदमी था, कामी था। उन्होंने यह काम जो मुझे दिया था केवल इसलिए दिया था, उन्होंने मुझे कहा था, "फकीर ! तुमको सत्तगुरु राधास्वामी दयाल सत्संगियों के रूप में मिलेंगे।' यदि मैं अब सत्संगियों को गुरु न मानूँ तो किसको मानूँ, बताओ मुझे ? जब गुरु ने मुझे कह दिया कि तुमको सच्चा सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा तो आप लोग मेरे पास आते हैं, मैं आपको सच्चे दिल से प्रेम करने के लिए मजबूर हू। आप को गुरु रूप समझ के नमस्कार करता हूँ। क्योंकि आपके अनुभवों से मुझे ज्ञान मिलता है।

जो-जो कर्म किसा ने किये हुए हैं वो नाश नहीं हो सकते। सन्त हो, परमसन्त हो, योगी हो, महात्मा हो जो-2 कर्म उन्होंने किये हुए हैं उनका फल उनको अवश्यमेव भुगतना पड़ेगा, कोई ताक़त रोक नहीं सकती। अगर गुरु ज्ञान मिल जाय तो कर्म तो

भुगतना पड़ेगा मगर उसमें वह दुःख और सुख नहीं मनायेगा बस, इतना ही फ़र्क है गुरुमत में आप लोग आते हैं, ध्यान से मेरी बात को सुना करो, विचारा करो तब तुम्हारा कल्याण होगा। अगर यों ही रस्मी तौर से आते हो, तो मेरा भी सिर खाते हो, अपना वक़्त गँवाते हो, किस लिए आते हो ?

तो मैं किस नतीजे पर पहुँचा ? कि ऐ इन्सान ! तू अगर यह चाहता है कि राम को भक्ति करने से या परमात्मा को याद करने से जो तुमने कर्म किये हुए हैं ये कट जायेंगे, यह ग़लत है, यह नहीं होगा। मैं कहता हूँ ऐ इन्सान ! राम-राम बेशक कम जप, अपनी नीयत को साफ़ रख। तीर जब कमान से निकल जाता है फिर उनके वश में नहीं रहता। तुमने गोली चला दी, गोली निकल गई फिर तुम कुछ नहीं कर सकते। इसी तरह से हमारे मन के अन्दर से जिस प्रकार के ख़्यालात निकलते हैं, अच्छे या बुरे वे तो निकल गये, अब तुम्हारे वश में क्या है, वे atmosphere (आकाश) में रहेंगे। जो हम विचार

करते हैं या ख़्याल करते हैं, किसी से नफ़रत करते हैं, किसी से बुरा करते हैं, किसी से प्रेम करते हैं, किसी से नेकी करते हैं वह वैसे ही है जैसे तीर कमान से निकल गया, वह ब्रह्माण्ड में मौजूद है उसके असर से तुम कैसे बचोगे और दूसरे कैसे बचेंगे। क्या कहा! मेरी बात को समझने की कोशिश करना !! इस बात को भूल जा, ऐ एन्सान! ऐ फ़कीर चन्द! तुम को, कहता हूँ, बेईमान !! तुम लोगों को क्या कहूं, मैं अपने आप को कहता हूं, तुम्हारी संगत से मुझे क्या मिला? यह ज्ञान मिला कि भई! भक्ति करने वालों को, समाधियाँ लगाने वालों को भी जो उन्होंने कर्म किये हुए थे उसकी सज़ा उनको मिली। मिली कि न मिली? बड़े-बड़े ऋषियों व भक्तों को मिली। क्यों मिली? क्योंकि हमारे अन्तर से जो ख़्यालात व विचार निकलते हैं, अच्छे या बुरे माद्दा नष्ट नहीं होता, साईन्स साबित करती है वे इस ब्रह्माण्ड में रहते हैं और उनकी प्रतिक्रिया (Reaction) हम पर होती है, यह है बात।

दाता! आप ने कहा था। तालीम बदल जाना, मुझे नहीं पता मैं क्या कर रहा हूँ मैंने जो अनुभव

किया वह संसार को बताये जाता हूँ कि तीर कमान से निकल गया फिर अगर तुम यह चाहो कि तीर जो तुमने फेंका किसी पर असर न करे, तुम्हारे वश की बात नहीं। जो ख़्याल तुम अपने दिल में सोचते हो, नफ़रत, द्वेष, बुग्ज़, हसद, कीणा, बैर, प्रम, मुहब्बत यह जब तुम्हारे मन से निकल गया, निकल गया। वह तो रहेगा आसमान के ऊपर और तुम पर उसका असर होगा। न्यूटन की थ्यूर्र साबित करती है कि तुम अपना हाथ हिलाअ तुम्हारे हाथ की हरक़त सितारों तक जाती है, फिर वहीं आती है जहाँ से हरक़त निकली थी, यह स्थूल पदार्थ की हरक़त है। हमारे मन से ख़्याल निकलता है, वह आसमान पर जाता है उसकी प्रतिक्रिया (reaction) हमारे पर होती है और हमको उसकी सज़ा मिलती है। अगर इस चोले में नहीं भी हैं, जिस चोले में हम होंगे वहाँ उसका असर होगा। यह साईन्स है, कोई क़रामात नहीं है।

जो कुछ हम तुम सोचते हैं उसका कोई नतीजा नहीं है, तुम भूल में हो। हमारे खयाल का नतीजा

है। स्वप्न के ख़्याल का नतीज़ा है कि नहीं ? स्वप्न के ख़्याल का भी नतीज़ा है। स्वप्न में तुम मर्द और स्त्री बना लेते हो। है तो वह ख़्याल ही ! ख़्याल की बनी हुई है न स्त्री ? तुम्हारा वीर्य निकल जाता है तो जो कुछ हम सोचते हैं उसका फल कैसे न मिलेगा, बच नहीं सकते। ऐ इन्सान ! भूल जा कि जो तीर तुम्हारे अन्तर से निकला हुआ है यह न आयेगा, तुम पर अच्छा भी आयेगा बुरा भी आयेगा :—

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब।

तो संगत से क्या हो जायेगा ? अब मुझे पता है, ना ! इसलिए मैं जहाँ तक हो सकता है अपने आप को बिलकुल सम्भाल के चलता हूँ। कोशिश करता रहता हूँ, किसी से मेरा द्वेष न हो, किसी के साथ मेरा झगड़ा न हो, मैं किसी के साथ दुश्मनी न करूँ। यह तभी करूंगा जब मैं अपनी ज़ाती ग़रज़ रखूंगा। अगर मेरी ज़ाती ग़रज़ है तो मैं झगड़ा भी करूंगा, लड़ाई भी करूंगा, अपना मतलब जो हुआ, ठीक है कि ग़लत है ? मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह

जाऊँगा। आपको क्या फ़ायदा पहुँचा! मुझे फ़ायदा पहुँचा, आपका तो बहाना था। मैंने इस सत्संग कराने से इतना ज्ञान हासिल किया है कि मैं खुद तृप्त व मस्त हो जाता हूँ। तो हमें क्या करना चाहिए? गुरु को संगत करनी चाहिए। किस गुरु की? जो खुद महरमेराज़ है। मैं अगर आपको सत्संग कराता हूँ, आप तो मेरे अन्तर में चारसौबीस है, बगुले भगत को तरह मुँह बनाकर इसलिए बैठा हुआ हूँ, मछली आई बगुले ने हड़प कर ली अर्थात् इसलिए बैठा हुआ हूँ कि तुम लोग आओ, तुमको अपने जाल में क़ाबू कर लूँ व फँसाऊँ। यदि इसलिए मैंने यह काम किया है तो लानत है मेरी ज़िन्दगी को और लानत है मेरे बाप को और मां को जिसने फ़क़ीर चन्द को पैदा किया। इस ग़रज़ के लिए नहीं मैं काम करता, मैं अपना कर्म भोगता हूँ, तुम पर भी एहसान नहीं करता, क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और दाता दयाल ने कहा था तालीम बदल जाना इसलिए वेबस हो के मैं काम करता हूँ। आप लोग आ जाते हैं मैंने जो समझा वह आप

को कहता हूं मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। आप सोचो मेरी बात को मैंने क्या कहा, ध्यान से सोचो ! कि जब स्वप्न का ख़्याल जो तुम्हारे वश में नहीं, तुम्हारे ऊपर असर करता है तो जो हम जाग्रत में सोचते हैं यह जो कुछ ख़्याल तुम सोचते हो यह बाहर रहता है, साईन्स ने साबित कर दिया कि माद्दा नष्ट नहीं होता। तो जो कुछ हम सोचते हैं, विचार करते हैं इसका असर ज़रूर होगा। तभी तो इस इल्म के आधार पर मैं कहता हूँ कि देश पर तबाही आयेगी कोई रोक नहीं सकता। आगे तो हमारे अपने घरों में था अब क्या है ? इन राजनैतिक दलों ने तमाम दुनिया का वातावरण गन्दा कर दिया। हर आदमी के अन्दर नफ़रत, द्वेष, बुग्ज़ और हसद है (अपनी-अपनी कुर्सियों ज़ायदादों के लिए) इसके असर से बचेगा कौन! इसलिए मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि तबाही आयेगी, आयेगी, आयेगी, कोई रोक नहीं सकता। और आ रही है, देखो ! कोई देश है जहाँ शान्ति है ? किसी देश में देखो ! इस वर्तमान प्रजातन्त्र प्रणाली ने तो दुनिया का बेड़ा ग़र्क कर दिया।

ये कहते हैं इन्होंने अच्छा किया, मैंने कहा, इन्होंने बहुत ही बुरा किया। यह मैं आवाज़ देता हूँ मगर मेरी आवाज़ सुनता कौन है।

तो कर्म के फल से कोई बच नहीं सकता। हम जो कुछ सोचते हैं, मैं बोल रहा हूँ यह आसमान में रहेगा। तुम बोलते हो यह भी वहाँ रहेगा। हम जो कुछ सोचते हैं यह ब्रह्माण्ड में रहेगा। जब से ज्ञान हुआ मेरी तो जान काँपती है सम्भल-2 कर पाँव टेकता हूँ। मुझे दाता दयाल ने कहा था :—

आहिस्ता ख़राम बल्कि अख़राम कि पाय तुरा जान हज़ार अस्त

अर्थ :— "आहिस्ता चल बल्कि मत चल कि तेरे पाँव के नीचे हज़ारों जानें हैं।" तो चलने का क्या मतलब है ? अच्छा ख़्याल कर, बुरा ख़्याल न कर अगर तू बुरा ख़्याल करेगा, दूसरों को नुक़सान पहुँचेगा। तो जो आदमी गन्दा है वह किसी को नुक़सान न पहुँचाये परन्तु उसके अन्दर से जो गन्दगी निकलती है वह भी atmosphere में रहती है। वह किसी को कहे कुछ ना, मगर जैसा वह है उसके अबख़रात

वहाँ रहेंगे और जहाँ-जहाँ वह जायेगा वहाँ का वातावरण खराब करता रहेगा, यह बताये देता हूँ आपको। यह साईन्स है, इसको रोक कौन सकता है :—

मुख्य साधन संग सत का, और शेष हैं समझ गौण।
इससे सूझेगी परमगति, सद्गति की चाल सब।

इस दुनिया में जो कुछ है संग है। बच्चा पैदा होता है, अगर मां-बाप, भाई उसके साथ बातें न करें, उसके साथ खेलें नहीं तो अक़्ल सीखेगा? नहीं सीखेगा। राजा भोज के ज़माने में यह आज़माया गया था। दो लड़के पैदा हुए। एक लड़के को एक जगह में रख दिया, सिर्फ़ दाई या मां जाती उसको कुछ दे देती, बोलना-चालना कुछ नहीं और दूसरे को शिक्षा दी। पहला जो था वह एँ-एँ करता रहा उसको कुछ नहीं आया। हम सब दूसरे के संस्कारों से असर लेते हैं, संग के बिना कोई रह ही नहीं सकता। अच्छो संगत में रहोगे, अच्छे ख़्याल व विचार करोगे तब तुम्हारा फ़ायदा होगा। मैं कहे जाता हूँ परन्तु मैं जानता हूँ कि आप लोगों पर मेरी बात का कोई असर नहीं होगा, मैं बेवकूफ़

नहीं हूँ, जानता हूँ। मगर मेरे वश में कोई बात नहीं, मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी मैं तालीम बदल चला। ऐ इन्साम ! तू भूल जा कि जो कुछ तेरे दिल के अन्दर ख़्यालात पैदा होते हैं इनके असर से तू बच जायेगा, नहीं बच सकता ! नहीं बच सकता !! साईन्स ने साबित कर दिया। और यही शास्त्र भी कहते हैं :—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा,
जो जस कीन सो तस फल चाखा।

दुनिया ने कर्म के मायने समझा हुआ है डण्डा मारना। यह हाथ हिलाना भी कर्म है। कर्म की जड़ वासना में है, जैसी हमारी नीयत है वैसी हमारी मुराद है। इसलिए मैंने चूँकि तालीम को बदला है। अपने आप को समझाता हूँ फ़कीर चन्द ! अपनी नीयत साफ़ रख। अपनी निजी ज़िन्दगी के लिए किसी के साथ धोखा, फ़रेब, चारसौबीस मत कर। अब आप लोग आते हैं ना ! मैं अपने मान के लिए कि हाँ तुम मुझे गुरु मानो, मुझे मत्था टेको, मुझे पैसे दो, इस ग़रज़ के लिए मैं काम नहीं करता, नाहिं ! आपका जी चाहे मन्दिर में दो पैसे दे दो, नहीं

चाहता न दो मैंने मन्दिर का कोई क़र्ज़ा तो देना नहीं। अगर क़ुदरत को इन ख़्यालात को फैलाने की मौज है तो क़ुदरत अपने आप मदद करेगी अगर नहीं फैलाना है तो न सहो, मैंने क्या लेना है। मुझे क्या, आज मरे, कल दूसरा दिन! समझता है पुरुषोत्तम दास! समझता है कि नहीं? :—

जिसने पाया पाया सत संग से, भक्ति ज्ञान गम।

जिसने भी पाया! छोटे बच्चे को जो कुछ मिला उसको संग से मिला। अच्छी बात सीखी संगत से सीखी, बुरी सीखी संगत से सीखी। संग के बिना कुछ नहीं! सन्तों के मार्ग का सत्संग जो है यह इन्सान की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने, ख़ुशहाल बनाने और भवसागर से पार करने के लिए है :—

जिस ने पाया सतसंग से पाया, भक्ति ज्ञान गम,
तू उतारेगा विवेक और तरकना की खाल सब।

सत्संग की बदौलत मैंने खाल उतार दी कि नहीं! हर चीज़ के बखिये उधेड़ दिये। किस की वजह से? सत्संग की वजह से। किसका सत्संग?

ऐ सत्संगियो ! तुम मेरे सत्गुरु निकले। तुम्हारे सत्संग से मैं इस राज़ को समझने के काबिल हो गया। दया दाता दयाल को है उन्होंने मसलहतन मुझे यह काम दिया था क्योंकि ऐसी साफ़ब्यानी सन्त कर नहीं सकते। अगर करें तो उनके डेरे नहीं बढ़ते, लोग नहीं आते। आप समझ गये कि नहीं ! और, वह वक़्त पिछला और था, मेरी साफ़ब्यानी से मुझे देता कौन है, बताओ तो सही ! रस्मी तौर से तुम लोग आते हो कोई एक रुपया, एक रुपया, एक रुपया देते हैं मगर मेरे ज्ञान के बदले मुझे कौन देता है, बताओ ? देते भी हो तो, अज्ञान में देते होंगे, जैसे कल एक आदमी मिला रात को, मेरे पास लड्डू लेकर आया। मैंने कहा—"भई ! कौन है, कैसे आया !" बाबा जी ! मैं पहले आया था आपने प्रसाद दिया था, आपके प्रसाद से मेरे पोता हो गया इस वास्ते मत्था टेकने आया हूँ। अब मैं सोचता हूँ मैंने पोता दिया था ? इस ख़्याल से यदि कोई चार पैसे देता है वह और बात है मगर मेरे ज्ञान के बदले मुझे कौन देता है ! :—

गुरु से ज्ञान जो पाइये, सीस दक्षिणा दे।

मगर इस ज्ञान की आप लोगों को क़दर नहीं, मुझे क़दर थी। मैं देखना चाहता था कि यह सन्तमत या राधास्वामीमत है क्या बला, जिसने मेरे सारे बज़ुर्गों का खण्डन किया? देता क्या है? हमें पहुँचाता कहाँ है? इस ख़ब्त में मैंने अपनी ज़िन्दगी गुज़ार ली। तो सत्संग से यह मिलता है :—

जिसने पाया पाया सत्संग से, भक्ति ज्ञान गम।

अब मैंने क्या ज्ञान पाया, भक्ति क्या पाई? भक्ति किसे कहते हैं? सहारे को। गुरु की भक्ति होनी चाहिए। गुरु है वाक्य। जो उसने वचन कहे हैं, जो उसने समझ दी है, जो उसने हुक्म दिया है उस हुक्म को पालन करना ही भक्ति है। यह जो हम मत्था टेकते हैं यह हमारी कमज़ोरी है। जब हम किसी के आगे गिड़गिड़ाते हैं ना! मत्था टेकते हैं, गिड़गिड़ाते हैं हाय! मैं पापी हूँ! यह हमारी कमज़ोरी है। असली भक्ति क्या है? गुरु ने जो बात तुमको कह दी, समझ में आ गई उसके ऊपर चलना असली गुरु भक्ति है। और ज्ञान भक्ति क्या है? मैं कौन हूँ, दुनिया क्या है, कहाँ से आया हूँ,

कैसे जीना है ? यह मैंने समझो है और यह समझ, दया दाता दयाल की है, सिर्फ़ आपकी दया से आई। अगर वह यह काम न देते तो मेरे बाप को भी इस सच्चाई का पता न लगता।

मैं इस नतीजे पर आया कि ऐ इन्सान ! तू भूल जा कि तूने इतनी माला फेरी है, जो तुमने कर्म किये हुए हैं उनके फल से तू नहीं बच सकता। न मैं, न राम, न कृष्ण, न देवी, न दाता दयाल, न गुरु नानक, न गुरु अंगद कोई भी नहीं बच सकता :—

कर्म जो जो करेगा, अन्त में भोगना पड़ेना।

इसलिए गुरु की महिमा का क्या फ़ायदा है ? कि उससे हमें समझ आ जाती है, हम आइन्दा बुरे कर्म नहीं करते और पिछले जो किये हुए हैं चूँकि हमें पता है कि हमने किये हुए हैं हम खुशी से भोग लेते हैं, हमको दुःख नहीं होता, इतना ही भेद है सारा और कुछ नहीं :—

जिसने पाया पाया सतसंग से, भक्ति ज्ञान गम,
तू उतारेगा बिवेक और, तरकना की खाल सब।

मैंने उतार दी कि न उतार दी ! पन्थ के पुर्ज़े कर दिये, सच्चाई को बिलकुल स्पष्ट कर खोल दिया, बात समझ में आ गई। क्यों ? क्योंकि मैंने सत्संग किया। दाता का सत्संग किया, आप लोगों का सत्संग किया। उनके वचनों से फ़ायदा उठाया, तुम्हारे तजुर्बों से फ़ायदा उठाया :—

कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन, नाम कुछ दिन मुक्त गति,
इसके पीछे पद है सत का, सत की रीती पाल सब।

कुछ दिनों सत्संग हो, बात समझ में आ जाय, फिर अभ्यास कर लो, फिर ज़िन्दगी खुशी से गुजारो। अब मुझे तुम्हारी वजह से मन के रूप का पता लग गया ना !, इसलिए अब मैं विवश हूँ, मन को छोड़ जाता हूँ। कहाँ जाता हूँ ? प्रकाश में और शब्द में। प्रकाश और शब्द जो है यही सत्तपद है और सत्तपद मेरी समझ में कुछ नहीं आया, होगा राधास्वामियों का या सन्तों का कोई और सत्तपद, मुझे नहीं पता। प्रकाश और शब्द की अवस्था जो हमारे अन्तर है उसका नाम मैं सत्तपद समझता हूँ, अगर कोई और सत्तपद है तो मुझे पता नहीं :—

अर्थ धर्म और काम मुक्ति, को है कुंजी सत का संग।
राधास्वामी संग कर दे, काट अब जंजाल सब।

अर्थ कहते हैं किसी उद्देश्य को, जो ख्वाहिश है सत्संग में जाओ। उसके हासिल करने का तरीक़ा मिल जायेगा कि ऐसे काम करो, ऐसे काम करो, दुनियावी तरीक़े से भी, परमार्थ के तरीक़े से भी। धर्म, ज़िन्दगी का जो उद्देश्य है उसके हासिल करने के लिए दूसरा महापुरुष जिस लाईन का हो चाहे व्यापार का हो, चाहे साईन्स का हो या परमार्थ का हो वह उसे तरक़ीब बता देता है, तरक़ीब बताये पर जो चलना है वह धर्म है। दुनिया के कारोबार में भी आपने जैसे इञ्जीनियरिंग पास कर लिया, मगर कोई न कोई इञ्जीनियर तुमको बतायेगा कि भई! इस तरह नहीं, ऐसे करो। तो बग़ैर संग के हमारी दुनिया नहीं बनती न परमार्थ बनता है।

तो आज सत्संग में जो मैंने तुमको बताना था बता दिया। आपको नहीं बताया! अपने आप को समझाता हूँ फ़कीर चन्द! सम्भल-2 कर चल। ऐसा ख़्याल मत सोच जिससे तेरे से दूसरों को नुक़सान

पहुंचता है (अपनी ज़ात के लिए) बस ! यह मैंने समझा है। मैं देखता हूँ, बड़े-बड़े भक्त भी अपने कर्म से न बच सके तो मैं कैसे बचूंगा। पिछला तो भुगत आगे तो न कर फ़क़ीर चन्द ! तुम लोग मेरे पास आते हो मैं सुखी नहीं हूँ, मै आपको बताये देता हूँ, मैं तो घसीटा जा रहा हूँ। मैं जानता हूँ जो कुछ मैं कहता हूँ दुनिया उसको सुनने को तैयार नहीं। आप सुन भी लें तो अमल करने के लिए तैयार नहीं, फिर भी मैं बेवकूफ़ हूँ बकता रहता हूँ। मेरे वश की बात नहीं। कर्म है ! पता नहीं क्यों, कब तक मेरा कर्मभोग है। कर्म की प्रधानता है और यही बात कबीर साहिब ने भी कही है :—

करम गति टारे नाहिं टरी ।।
मुनि वसिष्ट मे पंडित ज्ञानो, साध के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में विपति परो ।।
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि, कहँ वह निरग चरी।
सीता को हरि ले गया रावन, सोने की लंक जरी ।।
नीच हाथ हरि चन्द विकाने, वलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग, गिरगिट जोनि परी ।।
पांडव जिनके आपु सारथी, तिन पर विपति परी।
दुरजोधन को गर्ब घटायो, जदु कुल नास करी ।।

राहु केतु औ भानु चन्द्रमा, बिधि संजोग परी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, होनी हो के रही ।।

कर्म जो-जो किये हुए हैं उससे तुम बच नहीं सकते, आगे तो मत करो। बस ! मैंने बहुत कुछ आपको कह दिया, अपनी ड्यूटी पूरी दी। दाता, आपका एहसान ! पिछली उम्र है, शरणागत हूँ !! आपने कहा था तालीम बदल जाना, मुझे नहीं पता मैंने क्या किया, जो समझा वह कह चला, पता नहीं ठीक है पता नहीं ग़लत है। अपने चरणों में ले लें। दुनिया देख ली, बहुत देखी !!

मासिक सन्देश

मस्तरामसुतं देवं फकीरचन्दं पण्डितम्,
परमसन्तं दयालं च फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ।

मेरे प्यारे सत्संगियो ! मैं इस मास के सन्देश को गुरु वन्दना से शुरू कर रहा हूँ । यह वन्दना मैंने परम दयाल जी महाराज के शरीर में होते हुए लिखी थी और उनको सुनाई भी थी लेकिन मैंने इस वन्दना की व्याख्या उनके चोला छोड़ने के बाद कई सत्संगों में दी है । 29 सितम्बर को जब परम दयाल जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए मानवता मन्दिर में सन्त समागम हुआ, मैंने अपना सत्संग इसी वन्दना से शुरू किया । ऐसा लगता है कि कुछ लोग मेरी इस वन्दना का ग़लत अर्थ करते हैं इसलिए परमतत्त्व आधार, मालिकेकुल, परमतत्त्व के साक्षात् अवतार परम दयाल जी का आज्ञाकारी शिष्य होने के नाते मेरा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि

मैं इस बन्दना को पूरी व्याख्या करूँ
मन में इसके अर्थ न समझने के
न हो। सन्तमत में गुरु को पर
है। मेरे बहुत से सत्संगों में मैंने यह
है कि परम दयाल जो महाराज को पूर
समझना आसान नहीं है। उनकी लीला वि
और अपरम्पार रही है। उन्होंने अपने जीवन मे
दाता दयाल जी के इन शब्दों को सही साबित कर
दिया है :—

'तेरा सगुन रूप है सन्तमते का सार'

दाता दयाल जी के इस वाक्य को समझने के लिए हमें परम दयाल जी के सारे जीवन-चरित्र पर नज़र डालनी होगी। संक्षेप में मैं यह कह सकता हूँ कि उनका सगुण रूप जो उनके निज रूप की छाया थी और अब भी है सत्संगियों के अनेक काम बनाती रही है और अब भी वह सगुण रूप उसी तरह से सत्संगियों की सहायता करता हुआ दिखाई देता है जैसे कि वह उनकी शारीरिक उपस्थिति में करता था बल्कि अब तो पहले से भी

लोगों को उनकी अपनी भावना और उनके अपने विश्वास के मुताबिक अजीब-2 से अनुभव हो रहे हैं। यह बिलकुल सही है कि ऐसे अनुभवों में परम दयाल जी को उनके सगुण रूप के कारनामों का तनिक मात्र भी ज्ञान नहीं होता था लेकिन यह भी सही है कि मन के दर्जे पर जो अनुभव सत्संगियों को होते थे या हो रहे हैं वे बिलकुल असत्य नहीं हैं। परम दयाल जी ने यह भेद इसलिए खोला कि जिन गुरुओं ने सत्संगियों को इस भुलावे में रखा था कि वह या उनकी ज़ात चमत्कारी घटनाओं में उनकी सहायता करती है, वे सन्तमत की सच्चाई को छिपाने की कोशिश कर रहे थे। इससे भोलेभाले सत्संगी अपने गुरु के शरीर को ही सब कुछ मान लेते थे। गुरु के शरीर को ही सब कुछ मानना यानि उसके सगुण रूप को ही गुरु मानना सन्तमत के नियमों के बिलकुल विरुद्ध है। जब कोई शिष्य या सत्संगी गुरु के सगुण रूप को ही सब कुछ मान कर उससे मोह या प्यार करता है तो उसे हर हालत में फिर जन्म लेना पड़ता है। जिस गुरु ने इस सच्चाई को छिपाया है उसे भी उस सत्संगी को सच्चा ज्ञान देने के लिए

फिर जन्म लेना पड़ेगा। परम दयाल जी महाराज ने इस भेद को खोलकर दो बातें स्पष्ट की हैं।

एक बात तो यह कि इस भुलावे में आकर सत्संगी गुरु को देवताओं की तरह पूजते हैं और क्योंकि देवताओं का पूजना कालमत है इसलिए सच्चाई को छिपाने से सन्तमत दयालमत से गिर कर कालमत हो जाता है। दूसरी बात यह है कि सत्संगी जिन्हें सगुण रूप से ऊपर उठकर परमतत्त्व पर पहुँचने के लिए साधना करनी चाहिए अपने गुरु के सच्चे रूप को नहीं पहचान सकते। परम दयाल जी महाराज जब यह कहते थे कि ऐसी घटनाएँ केवल सत्संगियों के मन की शक्ति से घटित होती हैं और उनको अपने सगुण रूप की उपस्थिति का भान नहीं होता था उनके कहने का भाव यह था कि उनकी असली ज़ात सगुण रूप से अलग थी। दूसरे शब्दों में उनका मतलब यह था कि सत्संगियों को उनकी ज़ात को समझ कर ख़ुद भी उसी दर्ज़े पर पहुँचना चाहिए जिस दर्ज़े पर परम दयाल जी स्वयं रहते थे।

मैंने परम दयाल जी महाराज से 1978 में यह प्रश्न किया था, "ऐ मालिकेकुल ! अब इस शरीर में रहते हुए आपका परमतत्त्व आधार से इस वक़्त क्या सम्बन्ध है ?" उन्होंने मुझे यह उत्तर दिया था, "मानव ! जब एक पानी का बुलबुला फटता है वह फटकर पानी में मिल जाता है। उसके फटने के बाद और पानी में गुम होने से पहले जितना अन्तर होता है अब मैं उसी अन्तर में हो जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। बुलबुला फट चुका, मैं ज़ात में मिल चुका मेरा सगुण रूप सिर्फ़ उसी अन्तर या वक़्फ़ में ज़िन्दगी का सफ़र कर रहा है "

इससे यह स्पष्ट है कि परम दयाल जी के सगुण रूप को समझने से सन्तमत की सच्चाई का ज्ञान हो जाता है किन्तु ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि परम दयाल जी महाराज परमतत्त्व के अवतार नहीं, मनुष्य का चोला धारण ही नहीं किया। दाता दयाल जी के नीचे दिये गये पद्य को अच्छी तरह से समझने के बाद यह बात साफ़ हो जाती है कि उनकी ज़ात-ए-पाक ऊपर से उतर कर अवतार की हैसियत में जगकल्याण के लिए आई :—

तू तो आया नर देही में धर फ़कीर का भेसा,
दुःखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा ।

नर देही में आने का साफ़ मतलब यही है कि मालिककुल मनुष्य के चोले में आया और उसने फ़कीर का वेष बनाया। इस पद्य को ध्यान से पढ़ने पर हर एक मनुष्य समझ सकता है कि दाता दयाल जी स्वयं परम दयाल जी को हमारे समय का अवतार घोषित करते है। इस बात को मैं अगले मासिक सन्देश में और भी खोलकर लिखूंगा। दाता दयाल जी ने इसी सिलसिले में यह भी लिखा है :-

"तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही,
जगकल्याण जगत् में आया परम दयाल सनेही।

इन शब्दों से यह जाहिर है कि परम दयाल जी का शारीरिक रूप यानि कि उनकी उत्तम देही भी अद्भुत और आश्चर्यजनक थी अगर ऐसा नहीं होता तो दाता दयाल जी यह शब्द नहीं लिखते। मैंने परम दयाल जी के सम्बन्ध में वन्दना में उनके भौतिक शरीर से लेकर सूक्ष्म, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय, तपोमय और सत्यमय शरीर

सभी का वर्णन किया है जैसे कि गायत्री मन्त्र में ब्रह्माण्ड के सात दर्ज़े "भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, और सत्यम्" हैं वैसे ही ये दर्ज़े मनुष्य के होते हैं। परम दयाल जी के सम्बन्ध में ये सभी दर्ज़े पूजने योग्य इसलिए हो गये थे कि उन्होंने अपने जीवन में यह दिखा दिया था कि मालिकेकुल स्वयं मनुष्य के चोले में रहकर किस प्रकार का जीवन गुज़ार सकता है।

'मस्तरामसुतं' (मस्तराम जो का पुत्र) कहने का मतलब यह है कि वह शारीरिक रूप से भूलोक में विराजमान थे। 'देवं' कहने का मतलब यह है कि उनका सूक्ष्म शरीर दैवी प्रकार का था। 'फ़कीर चन्दं' शब्द का अर्थ यह है कि उनका मन जो चन्द्र-तत्त्व होता है, फ़कीरी भावों से भरा हुआ था। यहां तक तो परम दयाल जी महाराज के 'भूर्भुवः' दर्ज़े को ब्यान किया गया है। 'पण्डित' शब्द का अर्थ विज्ञान को जानने वाला है यह 'स्वः' यानि कि सूर्य का दर्ज़ा है। परम सन्त का मतलब 'महः' का दर्ज़ा है जो विज्ञान से ऊँचा है और जिसमें सन्तगति की

प्रधानता होती है। परमदयालता का अर्थ 'जनः' का दर्जा है जहाँ से दयाल देश की धारा बहती है और यह आनन्दमय कोश भी है। 'वन्दे फकीरं' का अर्थ 'तपः' का दर्जा है और फकीरतत्त्व का दर्जा है जिसके कारण उन्होंने अपने शरीर की तपस्या के द्वारा स्वयं दुःखों को सहन करते हुए भी सब का कल्याण किया। आखिर में जब इस वन्दना में उन्हें 'जगद्गुरु' कहा गया है, यह बतलाने की कोशिश की गई है कि वह जगत् से परे हैं यानि कि वह परमतत्त्व हैं जिनका असली दर्जा 'सत्यम्' का है। मैं यह आशा रखता हूँ कि यह व्याख्या जो सन्तमत और सनातन धर्म के अनुसार है आपकी समझ में आ गई होगी। परम दयाल जी की दया आप पर बनी रहे और आप सब इन विचारों को पढ़ कर उस सच्चे ज्ञान को अपने जीवन में उतारते रहें जो परम दयाल जी ने आप सब को दिया है और जिसको खोलकर बयान करने के लिए और सत्संगियों की सेवा करने के लिए उन्होंने मुझे आज्ञा दी है।

29 सितम्बर को परम दयाल जी की पहली व आखिरी श्रद्धाञ्जलि की बर्षी इसलिए मनाई गई

थी कि जो सन्तजन बैसाखी के अवसर पर किसी ग़लतफ़हमी के कारण होशियारपुर नहीं पधार सके थे वे होशियारपुर के शान्त वातावरण का अनुभव करने के लिए मानवता मन्दिर में पधार सकें। यूँ तो परम दयाल जी महाराज की वर्षी कभी मनाई नहीं जा सकती क्योंकि न तो वह जन्मे थे और न ही उनकी मृत्यु हुई है इसलिए ट्रस्टियों ने इस अवसर को पहली और आखिरी श्रद्धाञ्जलि कहा है। परम दयाल जी महाराज ने अनामीधाम से आकर जीवों पर जो उपकार किया है उसका भार कोई भी मनुष्य चाहे वह सन्त या परम सन्त क्यों न हो नहीं चुका सकता। सबसे ऊँची श्रद्धाञ्जलि यह है कि हम सब परमगुरु परम दयाल जी की आज्ञा का पालन करें और जो-2 कर्त्तव्य उन्होंने हम सब को दिया है उसे सच्चे दिल से निभायें। इन शब्दों के साथ मैं सभी सत्संगी भाई बहिनों को सद्भावना देता हूँ और आशा रखता हूँ कि वे सब स्वस्थ रहेंगे, प्रसन्न रहेंगे और आत्मा के आनन्द का अनुभव करेंगे। सब को राधास्वामी।

आपका फ़कीरमय,

मानव

———

नक़ल पत्र श्रीमती भाग्य शर्मा

(माता जी)

दिनांक 25-9-82

प्रिय नारायण दास जी तथा परदेसी जो,

राधास्वामी ! परम दयाल सहाई ।

यहाँ शान्ति, शान्ति, ख़ामोशी या एक दम चुपचाप के वातावरण में अपनी आत्मा से बात करने का अच्छा मौक़ा मिलता है ! मैंने पहले भी नारायण दास जी, आपको लिखा था कि कभी-कभी इस ख़ामोशी के वातावरण में समाधि अपने आप ही लग जाती है। इस समय फिर वही ख़ामोशी है और मैं अपनी आत्मा से बात कर रही हूँ। लगता है मेरा जीवन, मेरा अस्तित्व, मेरा अपना नहीं है, महाराज जी के बिना ऐसा लगता है कि जीवन में कुछ है ही नहीं। मेरा छोटा लड़का

प्रियदर्शी बहुत बड़ा दार्शनिक है। एक महीना पहले जब वह क्लीवलैण्ड में रह रहा था मुझसे रात के बारह कभी-कभी एक, दो बजे तक बातें करता रहता था। एक दिन बोला, 'मम्मी! आप इतना बड़ी लेखिका थीं, लेख लिखा करती थीं, आप के पत्र इतने अच्छे होते हैं उन्हें पढ़ कर मैं आप पर गर्व करता हूँ। आपने अपनी तरक्की के लिए कभी कुछ नहीं किया। आपने पापा के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। क्यों मम्मी! ऐसा क्यों किया आपने? पश्चिमी सभ्यता में पला लड़का यह नहीं जानता कि भारत में पत्नी के लिए पति ही सब कुछ होता है। मैं उसे कैसे समझाऊँ कि मेरी एक तो क्या हज़ारों ज़िन्दगियाँ महाराज जी के लिए न्यौछावर हैं। मैं आप दोनों को और सभी महाराज जी को प्यार करने वालों को यह बात दावे से कह सकती हूँ कि महाराज जी जैसे पवित्र दिल का आदमी मैंने नहीं देखा। आप उन पर सौ फ़ी सदी यक़ीन कर सकते हैं, परम दयाल जी के पवित्र मन्दिर के लिए वह अपनी जान की भी परवाह नहीं करेंगे। मैं कभी सोचती हूँ कि मैं जैसे महाराज जी की आज

तक उनके लिखने पढ़ने में सहायता करती आई क्या ठीक उसी प्रकार उनकी रूहानियत तथ भोलेभाले लोगों की सहायता करने में भी सहायता कर सकूंगी। परम दयाल जी ने मुझे 1980 में कहा था "देखो बेटी भाग्य ! अब तुम पति-पत्नी की भाँति नहीं रहा करो दोनों मिल कर परमार्थ का काम करो। मन्दिर को सम्भालना और मेरे असूलों पर चलना।" फिर बोले थे, "जब पति पत्नी परमार्थ का रास्ता अपना लेते हैं तो उन्हें बहुत बलिदान देने पड़ते हैं। मुसीबतें भी आती हैं, परन्तु अगर दोनों सच्चे होते हैं तो मुसीबतें आ कर टल जाती हैं।" एक दिन फिर बोले, "देखो भाग्य ! तुम दोनों को एक ही रास्ते पर चलना पड़ेगा। यदि ऐसा नहीं होगा तो बड़ी मुसीबत आयेगी तुम्हारे पर। दोनों में से एक को दुनिया छोड़नी पड़ेगी। मैं ठीक कह रहा हूँ। यह क़ुदरत का असूल है बेटी !" हे मेरे भगवान् ! मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि मुझे अपनी जान का परवाह नहीं, महाराज जी बने रहें। मैंने पिता जी को वचन दिया था कि मैं उनके असूलों पर चलूंगी, जरूर चलूंगी। मुझसे पिता जी ने पिछले दो सालों

में जितना प्यार किया उसको मैं शब्दों में नहीं लिख सकती। पिछले सोलह वर्ष तक मैं पिता जी को पूरी तरह नहीं पहचान सकी, इसका अफ़सोस मुझे ज़िन्दगी भर रहेगा। केवल दो साल ही मैंने पिता जी से मन भर कर प्यार किया जब वह 1976 और 1978 में यहाँ आये थे तो मैं दोनों बार India गई हुई थी। 1980 में जब वह हमारे घर पूरे 15 दिन तक रहे, तब मैं उन्हें पूरी तरह से पहचान पाई और उनके चरणों में लोट गई। एक रात को उन्होंने मुझे कहा था, "भाग्य ! एक बात बिलकुल सच-सच बताओ। दोनों बार जब मैं यहाँ आया तो तुम भारत क्यों भाग गई थी। क्या तुम मेरे से नाराज़ हो, क्योंकि मैंने मानव दयाल को अपना उत्तराधिकारी चुना है ? है न ! सच बताना। मैं जानता हूँ कि तुम अभी भी यहाँ के सुखों को छोड़ना नहीं चाहती, है न ऐसी बात ! ठीक है। यदि तुम तैयार नहीं तो मैं तुम्हारे पति को मजबूर नहीं करूंगा, किसी और को अपना उत्तराधिकारी चुनने की कोशिश करूंगा। तुम अपने पति के साथ यहाँ ऐश करो ! ऐश करो !!" पिता जी को ऐसी प्यार भरी

ताड़ना को सुन कर मैं फूट-फूट कर रो पड़ी थी और मैंने उनसे कहा था, "हे मेरे परम पूज्य पिता जी ! आप से क्या छुपाऊँ, आप तो अन्तर्यामी हैं। सचमुच ही मैं आपसे नाराज़ थी। सोचती थी आपने मेरे ही पति को क्यों चुना इस काम के लिए, भारत में किसी को क्यों नहीं चुना। परन्तु दयालु दाता इस बार आपने मेरी आँखें खोल दी हैं अब मैं परमार्थ के रास्ते पर चलना चाहती हूँ। मेरे सब अवगुणों को माफ़ करके मुझे अपना लीजिये और आशीर्वाद दीजिये कि मैं आपके आध्यात्मिक पुत्र मानव दयाल जी महाराज के काम में सहायता दे सकूँ।" परम पूज्य पिता जी ने मुझे ढेरों अशीर्वाद दिये उस दिन और मैंने उनसे वायदा किया कि आज से मैं मानव दयाल जी महाराज की पत्नी के तौर पर नहीं बल्कि एक परमार्थी सत्सगी के रूप में सहायता करती रहूंगी। पिता जी की अपार कृपा से मैं वैसा ही कर रही हूँ। साधना में तो मैं महाराज जी का सात जन्म तक भी मुकाबला नहीं कर सकती, लेकिन मैं किसी को धोखा नहीं देती, झूठ नहीं बोलती, नीयत को साफ़ रखती हूँ, लोभ भी नहीं किसी चीज़ का, हाँ!

मोह अभी पूरी तरह से नहीं छूटा। बच्चों से मोह है; महाराज जी से मोह है और आप सब से भी मोह है। अहंकार भी नहीं है मुझे, लेकिन क्रोध से अभी छुटकारा नहीं पाया। क्रोध तो आ जाता है। कभी-2 तो महाराज जी से भी क्रोध कर लेती हूँ बाद में पछताती हूँ। किन्तु इस क्रोध के बारे में आपको एक घटना बताती हूँ। 1980 की बात है हम वर्जीनिया में थे उस समय। एक बार एक सत्संग में जहाँ सब अमेरिकन ही थे मानव दयाल जी ने सत्संग देते हुए कहा, "मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं होती, किसी से द्वेष नहीं होता लोभ भी नहीं है, अहंकार भी नहीं परन्तु गुस्सा कभी-2 आ जाता है वह भी केवल अपनी पत्नी पर। मैंने आज तक दोनों बच्चों में से किसी को भी एक थप्पड़ नहीं लगाया। कभी किसी पर गुस्सा नहीं आता लेकिन भाग्य पर प्राय: गुस्सा आ जाता है। मैं सोचता हूँ कि मै पूर्ण नहीं हूँ इसलिए ही तो गुस्सा आता है! जिस दिन मुझे गुस्सा भी नहीं आयेगा उस दिन मैं पूर्ण हो जाऊंगा परन्तु जब मैं पूर्ण हो जाऊंगा उस समय मैं इस शरीर में नहीं रह सकता, मुझे यह शरीर भी छोड़ना पड़ेगा।"

इस वाक्य को सुन कर उनके एक परम श्रद्धालु भक्त डा० विलियम मैकेब ने मेरे पास आ कर कहा, "मिसिज़ शर्मा ! आप हम सब की एक प्रार्थना स्वीकार करें। वह प्रार्थना यह है कि आप डा० शर्मा को इस शरीर में रखने के लिए उन्हें रोज़ थोड़ी देर के लिए गुस्सा दिला दिया करें। हम डा० शर्मा को प्यार करते हैं उनके शरीर को भी प्यार करते हैं, हम नहीं चाहते कि वह इस शरीर को जल्दी छोड़ दें। अत: आपके अधीन है उनका शरीर रखना।"

सत्य कहती हूँ उस दिन के बाद मैं उनको थोड़ा सा गुस्सा रोज़ ही करवा देती हूं। जब वह गुस्सा करते हैं तो मुझे हर बार डाक्टर विलियम मैकेब की याद आ जाती है। कभी सोचती हूँ कि उनसे गुस्सा करना मेरा भारी पाप है फिर भी अक्सर गुस्सा आ ही जाता है और मैं मानव दयाल जी महाराज को पूर्ण नहीं होने देती। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि महाराज जी में और कोई भी कमी नहीं है और सभी सत्संगियों

से उनका जो प्यार है उसको सीमा नहीं है। जितने दिन वह यहाँ रहे, अपने परिवार तथा बच्चों के पास होते हुए भी वह एक परदेसी की तरह रहे। बोलते थे कि मन्दिर ही मेरा सब कुछ है उसके बग़ैर मन नहीं लगता। उनके इस प्रकार के व्यवहार से यहाँ के मित्र इस बार बहुत ही हैरान हुए, बच्चे भी।

न जाने ये सब बातें मैं आपको क्यों लिख रही हूँ। ऐसे लगता है कि आप से भी मेरा जन्म-2 का कोई रिश्ता है। मैंने अपने मन की इन बातों को पहले आज तक किसी को नहीं कहा। मेरा जीवन और वातावरण बिलकुल बदल गया है। आप सब का प्यार और सम्मान पा कर ऐसे लगता है कि मेरा भी सब कुछ मन्दिर में है और हज़ारों सत्संगी जो मुझे अरुण और प्रियदर्शी से भी अधिक प्यार करते हैं सभी मेरे प्रिय हैं। मानव दयाल जी महाराज मुझे होशियारपुर में ठीक ही कहा करते है "तुम अमेरिका में तो केवल दो बेटे ही छोड़ कर

आई हो, यहाँ तो तुम्हारे हज़ारों बेटे, बेटियाँ हैं कभी सोचती हूँ कि क्या मैं इस इज़्ज़त तथा प्य के क़ाबिल भी हूं या नहीं और परम दयाल जी से सदा प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे आप सब के प्यार तथा इज़्ज़त पाने के क़ाबिल बनाये रखें। उज्जैन में गाँव के लोगों का जो प्यार, विश्वास तथा श्रद्धा मैंने अपनी आँखों से देखी उससे मेरी आँख खुल गई। इतना विश्वास बहुत पढ़े लिखे लोगों में नहीं होता, क्योंकि पढ़े लिखे लोगों में विद्या का अहंकार और हर बात में वहम करने की आदत होती है। कभी-2 तो मेरी यह इच्छा होती है कि मैं भी न पढ़ी होती तो मेरा भी विश्वास अटूट होता। अमेरिका के लोग सच्चे, ईमानदार, सहायता करने वाले तथा जिज्ञासु हैं। लेकिन उनमें वह श्रद्धा और वह अटूट विश्वास नहीं जो हमने भारत में विशेष कर गाँव के लोगों मे देखा। पाश्चम के लोगों के संस्कार नहीं, तभी तो स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि पश्चिम का वातावरण और संस्कार ऐसे नहीं कि जहाँ महात्मा, सन्त या अवतार जन्म लें। बदकिस्मती से आज

भारत की हालत अच्छी नहीं, क्योंकि ज़्यादातर लोग ईमानदार नहीं, उनकी नीयत साफ नहीं और उनकी करनी और कथनी में बहुत बड़ी खाई है। ऐसा सब कुछ होते हुए भी उनमें कुछ जन्म-2 के संस्कार हैं तथा भूमि को पवित्रता है जिससे भारत बच जायेगा। पश्चिम में अधिकतर लोग ईमानदार हैं परन्तु उनमें संस्कार नहीं, अटूट विश्वास तथा श्रद्धा नहीं वे भी अधूरे हैं हमसे भी अधिक अधूरे, इसलिए वे हम से भी अधिक अशान्त हैं। परम दयाल जी के असूलों पर चल कर ही दुनिया में शान्ति हो सकती है। न जाने क्या-2 लिख गई। अब बन्द करती हूँ। महाराज जी का पूरा-2 ध्यान रखियेगा खास कर खाने-पीने का। उनका पेट ठीक नहीं रहता। रात को यदि नारायण दास जी आप उनके पास सो सकें तो मुझे बहुत शान्ति मिलेगी। महाराज जी के आराम का भी पूरा-2 ध्यान रखियेगा। लोगों के मिलने का समय निश्चित कर दें। मुझे महाराज जी के स्वास्थ्य का ध्यान लगा रहता है। अब वह आपके ही हवाले हैं, मैं तो हज़ारों मील दूर बैठी हूँ।

ऊपर तक मैंने कल लिखा था, मैं लिख ही रही थी कि अरुण का एक अंग्रेज़ मित्र विलायत से आ गया हमारे घर, पत्र वहीं रह गया। आज उसको पूरा कर रही हूँ। मुझे आज अचानक उन दिनों की याद आ रही है जब मन्दिर का वातावरण बिलकुल अशान्त था। मुझे रात भर नींद नहीं आती थी। समझ में नहीं आता था कि किस पर यकीन किया जाय और किस पर नहीं। यदि पिता जी की आज्ञा का पालन करने का सवाल नहीं होता तो मैं महाराज जी को एक दिन भी मन्दिर के इस वातावरण में रहने नहीं देती, हम वापिस यहीं आ जाते। उन दिनों आपने जो ढाढ़स बधाई उसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। आप सभी धन्य हैं, जिन्होंने परम दयाल जी महाराज की जो भर सेवा की और ज़िन्दगी के बीस साल उनके पास रहे। मैं तो इतनी किस्मत वाली नहीं थी कि जो पिता जी के साथ सालों तक रह पाती। फिर भी मालिक का बहुत-2 शुक्रिया है कि मैं पिता जी को दो साल से पहचान तो पाई। मुझे उनसे इतना

प्यार मिला जो अपने सगे पिता जी भी नहीं दे पाये। काश पूज्य पिता जी को मेरी उम्र लग जाती और वह कुछ वर्ष और रह पाते हमारे बीच! मैं आपसे प्रण करती हूँ कि मैं जीवन भर मन्दिर की सेवा में लगी रहूंगी, आप भी लगे रहना। पिता जी का मन्दिर और पिता जी की आज्ञा का पालन यही हमारे जीवन का मक़सद है और सदा रहेगा। बाकी चीज़ों का तो कुछ महत्त्व ही नहीं रहा। आप सब के सहयोग के कारण मन्दिर में जो अब शान्ति का वातावरण है, उसे सदा बनाये रखना हम सब का पहला धर्म है। मेरा मन मन्दिर में हा है। यहाँ तो मै महाराज जी की आज्ञा का पालन करने के लिए रह रही हूँ। उन्होने मुझ आज्ञा दी है कि मैं दिसम्बर में अरुण को साथ ले कर आऊँ और वह दिसम्बर से पहले आ नहीं सकता। मैंने पिता जी से वायदा किया था कि मैं मानव दयाल जी महाराज की सदा सेवा करूंगी उनको छोड़ कर बच्चों के पास नहीं रहूंगी लेकिन महाराज जी ने आज्ञा दी है कि मैं अरुण के पास रहूँ। आशा है परम दयाल

जी महाराज मुझे क्षमा करेंगे। मेरी ओर से आप को, आपके घर वालों को तथा सब सत्संगियों को मेरा राधास्वामी और महाराज जी को मेरा साष्टांग प्रणाम। परम दयाल जी महाराज आप सब पर दयालु रहें।

भवदीया

भाग्य शर्मा।

सत्संग परम सन्त मानव दयाल ज

महाराज, उज्जैन

दिनांक 21-6-82

मनुष्य बनो

प्रेम में चिंता हो कैसी, प्रेम दुचिताई नहीं।
प्रेम का नाता अलग, इसमें बहन भाई नहीं ॥
प्रेम जल प्रीतम तो मछली, प्रेमी उनमें प्रेम है।
जल से यह मछली अलग, होती मेरे भाई नहीं ॥
प्रेम है प्रेमी में. प्रेमी और प्रीतम एक हैं।
देखो सूरज और किरण, क्या उनमें एकताई नहीं ॥
आना जाना प्रेम में कैसा, मुझे भी दो बता।
रूप में है रूपता, जानी नहीं आई नहीं ॥
जोत दीपक की हुई, परगट पतिंगा आ गया।
पूछने की भावना, उसको कभी आई नहीं ॥
कीट भृंगी फूल भँवरे, नीर मछली शशी चकोर।
प्रेमी और प्रीतम की छवि, क्या गुरु ने बतलाई नहीं ॥
राधास्वामी ने दया की, प्रेम की आई समझ।
समझ पहले भी थी, समझे को समझाई नहीं ॥

मानवधर्मस्य धातारं दाता दयालस्य प्रियतमम् ।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

मेरी ही आत्मा के सर्वप्यारे सत्संगियो ! उज्जैन में आज सत्संग का दूसरा दिन है। इसमें कोई शक नहीं कि आपका प्रेम अनन्त है। प्रेम होता भी अनन्त है। प्रेम का अस्तित्व क्या है इस पर मैं सत्संग दूंगा और बताऊंगा कि प्रेम है क्या चीज़ ? प्रेम अनन्त क्यों है ? क्योंकि वह एक धारा है। सारा संसार जो है यह मालिक का प्रेम है। इसीलिए तो राधास्वामी नाम है। धारा जब ऊपर से चली तब एक से अनेक हो गई। वह अनेक जो हम हैं, वह एक से अलग होने के कारण तड़प है इसलिए चैन नहीं है। लोग समझते नहीं कि चैन क्यों नहीं है ! शरीर स्वस्थ है, धन है, सम्पत्ति है, मान है, इज्ज़त है, सब कुछ है परन्तु फिर भी कहते हैं कि शान्ति नहीं है। क्या कारण है ? कारण यह है कि जो प्रेम की तड़प है वह तड़प तो तब खत्म होगी जब जिस प्रेमी से

बिछुड़े हैं उसके साथ मिल जायेंगे। यह सारा संसार धारा है। धारा का मतलब ? धार जो बहती है। कबीर साहिब ने कहा है :—

कबीर धारा अगम की सत्तगुरु दीनि बहाय।
ताहि उलट सुमिरन करो स्वामी संग मिलाय॥

धारा में आप नीचे आये हैं इसलिए तड़प है। जैसे कि कहते हैं :—

जल में मीन प्यासी।

बड़े-2 ऐसे उदाहरण हैं कि सब कुछ होते हुए भी वह कमी को महसूस करते हैं। अमेरिका के अन्दर एक बहुत प्रसिद्ध फिल्म नायिका (एक्ट्रैस) मैरोलिन मुनरो थी। फिल्म एक्टर तथा एक्ट्रैस बहुत पैसा कमाते हैं। अगर यहाँ कोई फिल्म का नायक शहर में आ जाये तो सब के सब सत्संगी देखने चले जायेंगे क्योंकि वह बहुत प्रसिद्ध होते हैं। वह बहुत सुन्दर थी, पैसा था, मशहूरी थी और हुआ क्या कि आत्महत्या कर ली, जहर खा कर मर गई। क्यों ? क्योंकि उसके अन्दर कमी थी। एक बड़ा भारी लेखक हैमिंग वे था जिसको किताबों के लिखने से करोड़ों की आमदनी थी। उसको

किताबें सब बड़े शौक से पढ़ते थे, वह फाँसी लगाकर मर गया। इसी तरह से हावर्ड ह्यूज़ एक अरबपति था। इतना पैसा था कि गिन नहीं सकता था। जहाँ जाता था कोई याचक मिलता, दे दो पाँच लाख, दस लाख, वह भी आत्महत्या करके मर गया। क्या कारण है ? तड़प ! मनुष्य प्रेम के लिए पदा होता है, उस मालिक को ढूँढ़ने के लिए आता है, भूल जाता है तो अशान्त रहता और तड़पता है।

आपके साँस के अन्दर वह शब्द चल रहा है जो आपकी आत्मा को कह रहा है कि आप ऊपर से आये हैं, ऊपर जाना है। यह प्रेम है। जब तक प्रेम को समझो नहीं, जब तक प्रीतम को पाओ नहीं तब तक तड़प रहती है। प्रेम बेअन्त बहता है क्योंकि यह आत्मा से निकलता है, जैसे गंगा बहती है और नीचे मैदात में जा के एक तालाब बनाया, आगे गई और बनाया, बहती चली जाती है। लोग कहते हैं प्रेम शरीर से होता है यह बात ग़लत है। इसका अनुभव हुआ कि ज़ात का आधार प्रेम है।

आज मैंने महाराज जी को प्रणाम करते हुए 'मानवधर्मस्य धातारं' अर्थात् उन्हें मानवधर्म के आधार कहा है। मानव है क्या ? मानव मनु तत्त्व से है इसका मतलब है कि हमारे अन्तर परमतत्त्व है। यह मानवधर्म हमारी अपनी ज़ात का ही धर्म है। इन्होंने सन् 1947 में आज़ादी के दिन मानवता का झण्डा फहराया और 'मनुष्य बनो, इन्सान बनो' का नारा लगाया क्योंकि रचना में सब से श्रेष्ठ मनुष्य ही है।

यही बात उपनिषदों और पुराणों ने भी कही है। प्राचीन समय में एक बार ऋषियों की एक बड़ी भारी सभा हुई। उस सभा के अन्दर सबाल पैदा हुआ कि सारे ब्रह्माण्ड में सबसे श्रेष्ठ क्या चीज़ है ? किसी ऋषि ने उठकर कहा कि सब से श्रेष्ठ परमतत्त्व है। परमतत्त्व सबसे न्यारा और सबसे ऊँचा है, हर जगह है, आप सब के अन्दर मौजूद है मगर परमतत्त्व तो दिखाई नहीं देता। सभा चुप रही, किसी ने ज़वाब नहीं दिया। उसका यह मतलब था कि यह उत्तर उनको जँचा नहीं।

दूसरा ऋषि उठा उसने कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश जिन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को रचा है और पालन करते हैं, ये देवता ही श्रेष्ठ हैं। यह ज़वाब भी किसी का पसन्द नहीं आया, सब चुपचाप रह गये। तो किसी ने कहा कि यह जो अणु शक्ति है यह सब से श्रेष्ठ है। इस उत्तर पर भी किसी को तसल्ली व सन्तोष नहीं हुआ। फिर वेदव्यास जी ने ऋषियों को कहा कि मैं आपको सबसे ज़्यादा गुप्त भेद बता रहा हूँ कि इस ब्रह्माण्ड के अन्दर मनुष्य से श्रेष्ठ और कोई वस्तु नहीं है। ऐसा श्रेष्ठ आपका जन्म है इसलिए मानवधर्म के परम अवतार, आधार परम दयाल जी ने कहा कि इन्सान बनो। उन्होंने यह नहीं कहा कि भगवान् बनो। भगवान् तो बहुत मिलते हैं, इन्सान नहीं मिलता। अगर इन्सान बन जाओगे तभी तुम परमतत्त्व को पहचानोगे, यही था मंगलाचरण। दाता दयाल ने कहा है :—

अब आदमी कुछ और ही हमारी नज़र में है,
जब से सुना है यार लिबासे बशर में है।

भगवान् को मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में कहाँ ढूँढ़ते फिरते हो, अपने आप को पहचानो!

मालिक परमतत्व अगर साक्षात् कहीं है तो हर मनुष्य के दिल में है और मनुष्य का स्वरूप है, वहाँ अपने अन्तर में उससे प्रेम करना सीखो। जब तक उसे अपने दिल में नहीं पहचानोगे, सच्चा प्रेम हो नहीं सकता और जब तक सच्चा प्यार नहीं, सच्ची मानवता नहीं। सच्चा प्रेम ही सच्ची मानवता या सच्ची इन्सानियत व सच्ची रूहानियत है।

अच्छों से तो सभी प्यार करते हैं परन्तु मनुष्यता यह है कि मन पर क़ाबू रखा जाय और प्यार उस समय दिखाया जाय जब दूसरा नफ़रत करता है। प्यार करते जाओ। जब लगातार प्यार करते जाओगे तो आप की जीत हो जायेगी। प्यार से पशु को भी जीता जा सकता है। क्या होता है प्यार से ? क्योंकि प्यार से किरणें निकलती है। प्रेम में साँप भी नहीं काटता, शेर भी हमला नहीं करता, जब आप डर जाते हो तब वह हमला करता है। जब तक प्रेम नहीं होता तब तक कोई आदमी नहीं कह सकता कि वह सन्तगति पर है।

जो सच्चा इन्सान है वही सच्चा साधु है। साधु

को क्या परीक्षा है, दाता दयाल जी महाराज ने एक साधु की कथा लिखी है कि नदी के किनारे पर एक साधु खड़ा था। उसने देखा कि बिच्छू पानी में डूबा जा रहा है। बिच्छू को हाथ में उठाया और किनारे पर लाकर रखा। रखने से पहले बिच्छू ने उसे डस लिया। दूसरी बार बिच्छू पानी में गया, फिर उसने जाकर उठाया और दूर जाकर रखा। दूसरी बार बिच्छू ने फिर डस लिया। तीसरी बार उसने फिर उसे उठाया और बहुत दूर जाकर रखा। तीसरी बार जब डस लिया तो एक माई खड़ी थी, उस देवी ने कहा, साधु! तुम बडे शरीफ़ लगते हो क्या तुम्हें इतनी भी अक़्ल नहीं कि बिच्छू का स्वभाव है कि वह डंक मारता है और डसता है। उस ने कहा माता! मुझे मालूम है। बिच्छू का स्वभाव है डसना और जब बिच्छू अपना स्वभाव नहीं छोड़ रहा, मेरा स्वभाव बचाना है, प्रेम करना है, मैं अपने स्वभाव को क्यों छोड़ूं! यह है मानवता। और अगर आप इस पर चलें तो मानवता से क्या होता है? आप के चारों तरफ प्रेम का एक वृक्ष बन जाता है और जहाँ जाओगे अपने आप उसका प्रभाव होगा। मैंने

इसका अनुभव किया है। 1965 में मैं अमेरिका में एक शहर में पढ़ाता था और सप्ताह में दो दिन की छुट्टी के समय में अपने एक मित्र के यहाँ रहता था, वहीं खाना खाता था। हर सोमवार को प्रातः उसकी पत्नी मुझे बस स्टैण्ड पर पहुँचाने आती थी। एक दिन ऐसी मज़बूरी हुई कि वह साथ तो नहीं जा सकती थी परन्तु मुझे बाहर के फाटक तक पहुँचाने आई जिसके साथ ही पगडंडी थी। फाटक बन्द करके वह खड़ी ही थी और मैंने पगडंडी पर चन्द कदम ही बढ़ाये थे कि एकदम उसने चिल्ला कर कहा, "डाक्टर साहिब ! ध्यान रखना कि हमारे पड़ोसी का कुत्ता है।" जब तक उसने कहा, वह कुत्ता, मैंने इतना बड़ा कुत्ता कभी नहीं देखा था, बहुत बड़ा, गधे जितना कुत्ता था, लपक कर ज़ोर-ज़ोर से भौंकता व दौड़ता हुआ मेरी ओर आने लगा। मैं खड़ा रहा और मैंने प्रेम से उसको कहा डौगी ! डौगी ! कुत्ते ! आओ इधर !! वह जो प्यार से मैंने उसको कहा वह मेरे नज़दीक आकर के चुप हो गया और दुम हिलाने लगा। लोग हैरान रह गये। इन्सान तो क्या हैवान पर भी प्रेम का असर होता है। अगर

प्रेम के असूल पर चलो तो ही तुम निश्चित तौर से अपने आपे या परमतत्त्व को पा सकते हो जो प्रकाश से परे है, सत्तलोक से परे है और अलख, अगम से भी परे है और जो सन्त धर्म का आदर्श है जिसकी परम दयाल जो ने ऊँचे से ऊँचा होने की पुष्टि की है जिस के कारण ही उनको सन्त धर्म का रक्षक कहा गया है।

ऐ मनुष्य ! तू अपने आप को ढूँढ़ व पहचान। तू भूला हुआ है, बूंद सिन्धु से निकल कर आ गई है और उसको यह ज्ञान नहीं है कि मैं सिन्धु भी हू और अनन्त भी हूँ। तेरे अन्दर जो प्यार है, वह प्यार जब बहता है तो वह प्यार अनन्त प्यार है। प्यार आत्मा से होता व बहता है। किस्म-किस्म का प्यार है। आप कोई प्यार ले लीजिये वह प्यार एक करता है दुचिताई नहीं होती है, प्यार की यह निशानी है।

आत्मा एक प्रकार का दरिया है जो बहा एक दायरा बनाया, दूसरा बनाया, इस तरह आगे

खेलता जाता है अगर रुक जाये तो वह पानी बिलकुल गन्दा हो जायेगा और बदबू आयेगी।

होता क्या है ? बच्चा जब पैदा होता है, वह मालिक या परमतत्त्व की तलाश में और मालिक को प्यार करने आता है। लेकिन जब छोटा होता है पहले वह मां ही मां को प्यार करता है। असल में तो परमतत्त्व की तलाश में आता है क्योंकि जब वहाँ से निकला तब तड़प हुई कि जहाँ से आया है वहाँ जाये। वह तड़पन है, वह दर्देदिल है जो हमको साँस-साँस पर उधर लगा रहा है परन्तु हम सुन नहीं रहे, हम तो समझते हैं कि यह शरीर हमारा है, यह मन हमारा है, हम मन हैं यद्यपि आदमी तब तक जीवित रहता है जब तक साँस है, प्राण है। शरीर, मन और आत्मा सब साँस से जुड़े हुए हैं। मैंने बताया कि सच्चा प्रेम आत्मा से निकलता है और पानी के बहाव की तरह उसकी भी तीन सूरतें होती हैं। पानी कभी नीचे से ऊपर फव्वारे को तरह जाता है, तो ऐसे ही छोटा बालक जब माँ से और शिष्य गुरु से प्रेम करता है उस बहाव को कहते हैं

श्रद्धा। यह शरणागत का भाव होता है क्योंकि उसको पूर्ण विश्वास हो जाता है कि मेरा कोई है। उसको आश्रय मिल जाता है। दूसरी सूरत, जैसे पानी ऊपर से नीचे की तरफ़ आता है ऐसे ही माँ का बच्चे के साथ प्यार, पिता का पुत्र से प्यार और गुरु का शिष्य से प्यार, इसको कहते हैं वात्सल्य। मां जब बच्चे को प्यार करती है उसको थप्पड़ भी लगा देती है तो वह समझती है कि वह उसका है, उसमें अपनत्व की भावना होती है कि यह मेरा है, उसे अपनी आत्मा समझती है। इनमें गुरु शिष्य का प्रेम अनुपम प्रेम है, जो निःस्वार्थ प्रेम होता है। तीसरा प्यार होता है जैसे पानी समतल बहता रहता है अर्थात् बराबर का प्यार, इस को कहते हैं स्नेह। लेकिन पति पत्नी के प्रेम को हमारे शास्त्रों में दाम्पत्यरति कहते हैं जो इन तीनों प्यारों का समूह होता हैं! जहाँ ये तीनों किस्म के प्यार नहीं होंगे घर नहीं चल सकता! जहां ये तीनों प्यार मिले-जुले होंगे तो घर ऐसा चलेगा कि घर में अशान्ति हो ही नहीं सकती!

प्रेम में चिन्ता हो कैसी, प्रेम दुचिताई नहीं।
प्रेम का नाता अलग, इस में बहन भाई नहीं।।
जोत दीपक की हुई, परगट पतिंगा आ गया।
पूछने को भावना, उस को कभी आई नहीं।।

प्रेम में चिन्ता हो नहीं सकती। दीपक की लौ से पतिंगे को प्रेम होता है, वह फ़ौरन आ जाता है, उस को सोचने की व सवाल करने की ज़रूरत नहीं है, इसलिये प्रेम में कोई नियम नहीं होता, प्रेम अपना नियम आप है। जब प्रेम सच्चा होता है उस में किसी किस्म का सोचना-विचारना नहीं होता, सोचने का वहाँ सवाल ही नहीं! इसीलिये बुद्धि वाले प्रेम कम करते हैं, तभी कहा गया है :—

पढ़ पढ़ पत्थर भये पंडित भया न कोए।
ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होए।।
कीट भृंगी फूल भँवरे, नीर मछली, शशी चकोर।
प्रेमी और प्रातम की छवि, क्या गुरु ने बतलाई नहीं।।

असली ज्ञान उसे ही होता है जिस का प्रेम बहता है। जिस के अन्दर प्रेम नहीं है वह ज्ञानी नहीं है, वह केवल रोचक ज्ञानी है :—

राधास्वामी ने दया की प्रेम की आई समझ।
वह समझ पहले भी थी, समझे को समझाई नहीं ।।

अब यह सन्तमत का जो राज है, यह कैसा सुन्दर राज़ है कि राधास्वामी ने दया का! आप समझेंगे स्वामी शिव दयाल ने दया कर दी है। ये ग़लत सूचनाएँ हैं। राधास्वामी क्या है? राधास्वामी एक हालत, एक अवस्था का नाम है, जब उस के साथ जुड़ गये तो सब के साथ अपने आप जुड़ जाओगे। जब राधास्वामी नाम व राधास्वामी अवस्था को महसूस कर लिया जो सब अवस्थाओं से न्यारी है तो किसी से नफ़रत नहीं हो सकती बल्कि प्रेम व प्यार को आधार बना कर, मनुष्यता के मंगलमय लक्ष्य, परमतत्त्व से एक हो जाओगे, तभी तुम्हें पूर्ण शान्ति मिलेगी।

सूचना

मानव कल्याण सभा, चण्डीगढ़ का पहिला वार्षिक सत्संग, हजूर परम सन्त परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में, हजूर मानव दयाल जो महाराज की अध्यक्षता में 20/21 नवम्बर 1982 को मनाया जायेगा, जिस में निम्नलिखित महानुभाव सत्संग देंगे।

1. परम सन्त हजूर पोरेमुगां जी साहिब, देहली।
2. परम सन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज, होशियारपुर।
3. सन्त तारा चन्द जी महाराज, विनोद (हरियाणा)
4. हजूर भगत जी महाराज, चण्डोगढ़।
5. हजूर आनन्द दयाल जी महाराज, देहलो।

स्थान :- श्री सनातन धर्म मन्दिर धर्मशाला
सैक्टर 27-सी चण्डोगढ़।

कार्य-क्रम—

20-11-82 शनिवार सायं 3 से 5-30 बजे

21-11-82 रविवार प्रात: 9 से 12 बजे

नोट :- 1. सत्संग ठीक समय पर शुरू हो जायेगा।

2. हर सत्संग के शुरू में 15-20 मिनट के लिए हज़ूर परम सन्त परम दयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज के टेप रिकार्ड किये हुए सत्संग प्ले किये जायेंगे।

5. बाहर से आने वाले सत्संगी, अपना बिस्तरा साथ लायें और खाने का प्रबन्ध केवल बाहर के सत्संगियों के लिए यथायोग्य, मानव कल्याण सभा करेगी।

त्रिलोक चन्द

प्रधान

मानव कल्याण सभा

चण्डीगढ़।

———

Regd. No. 2626574 NOVEMBER 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hnmanth Rao
H. No. 10-3-194/8 Humayun
Nagar Hydrabad A. P.
Pin—500028

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press. Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)